**भारत सरकार**
**कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय**
**कृषि एवं किसान कल्याण विभाग**
**लोक सभा**
**अतारांकित प्रश्न सं. 2558**
**19 दिसंबर, 2023 को उत्तरार्थ**

**विषयः पुनर्योजी कृषि**

**2558. श्री एस. जगतरक्षकनः**

क्या **कृषि एवं किसान कल्याण** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या पुनर्योजी कृषि (आरए) के माध्यम से कार्बन क्रेडिट और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं सृजित करने की बड़ी संभावना है;

(ख) यदि हां, तो पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं का जीवनचक्र विश्लेषण और मूल्यांकन, कार्बन क्रेडिट और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के माध्यम से किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए बड़े कार्बन उत्सर्जन को कम कर सकता है को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा उठाए जाने वाले प्रस्तावित कदमों का ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या सरकार इस बात से अवगत है कि पुनर्योजी कृषि (आरए) सिंचित गहन प्रणालियों के साथ-साथ शुष्क क्षेत्रों में हरित क्रांति की दूसरी पीढ़ी की समस्याओं का समाधान करने में मदद कर सकती है जहां प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक दबाव है; और

(घ) यदि हां, तो यह ध्यान में रखते हुए कि पुनर्योजी कृषि सभी के लिए लाभकारी है जो कृषि में मौजूदा चुनौतियों का समाधान करते हुए कृषि-खाद्य प्रणालियों को बदलने में मदद करता है, सरकार द्वारा प्रस्तावित पहलों का ब्यौरा क्या है?

**उत्तर**
**कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री (श्री अर्जुन मुंडा)**

(क) से (घ): पुनर्योजी/सतत कृषि पद्धतियों को अपनाने और किसानों को कार्बन बाजारों से जोड़ने के साथ-साथ ऐसी पद्धतियों से पारिस्थितिकी तंत्र जैसी सेवाओं को प्राप्त करने के माध्यम से लाभकारी कृषि को बढ़ावा देने के लिए कृषि में कार्बन क्रेडिट का सृजन महत्वपूर्ण है। पुनर्योजी /सतत कृषि, मृदा की उर्वरता का निर्माण और सुधार करने, वायुमंडलीय सीओ2 को अलग करने और संग्रहित करने, खेत की विविधता बढ़ाने और जल एवं ऊर्जा प्रबंधन में सुधार करने का एक तरीका है। एकीकृत कृषि प्रणाली, जैविक खेती, प्राकृतिक खेती, संरक्षित कृषि और कृषि वानिकी-आधारित उत्पादन प्रणाली जैसी कुछ पद्धतियों को पुनर्योजी कृषि को बढ़ावा देने वाला माना जाता है। राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (एनएमएसए) के तहत कृषि वानिकी, सूक्ष्म सिंचाई, फसल विविधीकरण, राष्ट्रीय बांस मिशन, प्राकृतिक/जैविक खेती, एकीकृत खेती प्रणाली आदि जैसे कई हस्तक्षेपों में मृदा में कार्बन को अलग करने और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं प्रदान करने की क्षमता है, जिससे सिंचित गहन प्रणालियों के साथ-साथ शुष्क भूमि कृषि प्रणालियों में हरित क्रांति की दूसरी पीढ़ी की समस्याओं का समाधान करने में मदद मिलती है।

आईसीएआर-भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम के माध्यम से

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद दो अनुसंधान योजनाएं, अर्थात् एकीकृत कृषि प्रणाली मॉडल विकसित करने के लिए एकीकृत कृषि प्रणाली पर ऑल इंडिया कॉर्डीनेटेड रिसर्च प्रोजेक्ट (एआईसीआरपी) और फसलन तथा कृषि प्रणाली परिप्रेक्ष्य में फसलों के जैविक उत्पादन के लिए पद्धतियों का पैकेज विकसित करने के लिए जैविक खेती पर अखिल भारतीय नेटवर्क कार्यक्रम संचालित करती है। इन योजनाओं के परिणामस्वरूप, तकनीकी संबल प्रदान करने के लिए 26 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के लिए 71 प्रोटोटाइप एकीकृत कृषि प्रणाली मॉडल और 16 राज्यों के लिए उपयुक्त 72 फसल प्रणालियों के लिए जैविक खेती पैकेज जैसी सतत कृषि पद्धतियां विकसित की गई हैं। ये मॉडल और पद्धतियों अधिक कार्बन को अलग करने, कृषि विविधता बनाए रखने और जल एवं ऊर्जा प्रबंधन में सुधार करने में सहायक पाई जाती हैं। विकसित आईएफएस मॉडल और जैविक खेती पैकेज को स्केलिंग के लिए केंद्रीय और राज्य एजेंसियों के साथ साझा किया गया है। किसानों के लिए आवश्यकता आधारित क्षमतावर्धन कार्यक्रम भी आयोजित किये जा रहे हैं।

*****